प्रश्न- सिंहरण का चरित्र चित्रण कीजिए ?

सिंहरण का व्यक्तित्व हमारे सामने सर्वप्रथम उत्साही और निर्भीक युवक के रूप आता है। वह आम्भीक से कहता है "यों तो विनम्रता के साथ निर्भीक होना मालवों का वंशानुगत चरित्र है, फिर उसे तक्षशिला की शिक्षा का भी गर्व है।" सिंहरण में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी है। आम्भीक के कुचक्र का उसे आभास हो गया है जिसे वह आर्यों का कलंक समझता है। राष्ट्रीयता सम्बंधी उसका दृष्टिकोण विशाल है। वह कहता है- "मेरा देश मालव ही नहीं, गंधार भी है। यही क्या समग्र आर्यावर्त है।" सम्पूर्ण आर्यभूमि की रक्षा के लिए वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति और बुद्धि को एकनिष्ठ करके चाणक्य की आज्ञा पर केन्द्रित कर देता है। उसका जीवन जन्मभूमि की रक्षा में न्यौछावर है।

सिंहरण का व्यक्तित्व वीरत्व से परिपूर्ण है, जिसमें शिथिलता की कहीं भी गंध नहीं आ पाई है। सर्वत्र कर्त्तव्य की प्रमुखता रही है जिसके कार्य तल्लीनता और लगन के प्रतीक है, जिसके व्यवहार में वास्तविकता है। जिसका 'वीर हृदय' मयूर की भाँति चंचला रणलक्ष्मी के आह्वान पर 'सुन्दर नील-लोहित प्रलय जलद को देखकर नृत्य करने लगता है। तभी तो सिकन्दर के दूत की सूचना सुनकर वह निर्भीकता से कह देता है- "सिकन्दर से मालवों की ऐसी कोई सन्धि नहीं हुई है..... हाँ भेंट करने के लिए वे सदैव प्रस्तुत है चाहे सन्धि परिषद में या रणभूमि में।"

देशभक्त सिंहरण का आत्माभिमानी स्वरूप जो तक्षशिला गुरुकुल में प्रखर होता है वह सर्वत्र ही उसके चरित्र की निधि बना रहता है। युद्ध वीरता और रण कौशल उसमें इतना है कि सिकन्दर जैसे वीर को भी वह मालव दुर्ग पर ~~इस प्रकार~~ घायल करता है जो उसकी असामयिक मृत्यु का कारण बनता है। उसमें सिंहरण में उपकार की भावना भरी हुई है। तभी तो ~~मालव~~ सिकन्दर का वध करते हुए मालव वीरों को रोकते

हुए कहता है— " ठहरो मालव वीरो! ठहरो! यह भी एक प्रतिशोध है। यह भारत के ऊपर एक ऋण था, पर्वतेश्वर के प्रति उदारता दिखाने का यह प्रत्युपकार है।" इसमें भारतीय गौरव वृद्धि तो टपकती ही है, साथ ही उसकी रणकुशलता भी प्रतिलक्षित होती है। सिंहरण की प्रवृत्ति विपत्ति में भी घबराने वाली नहीं है। मालव किले में ~~से~~ ~~[illegible]~~ यवन सेना के भीतर प्रवेश होने पर भी वह घबराता नहीं है, विचलित नहीं होता। वह सैनिकों से उत्साह से कहता है, समस्त मालव सेना से कह दो कि सिंहरण तुम्हारे साथ मरेगा। तभी तो अलका मुग्ध होकर कह देती है कि— "जिस देश में ऐसे वीर युवक हो, उसका पतन असम्भव है।"

~~नाटककार ने सिंहरण में~~ सिंहरण को वीरता के ~~साथ~~ आदर्श में आदर्श जीवन प्रेमी के रूप में व्यक्त किया है। सिंहरण के लिए अलका सर्वत्र उसकी ही बनी रहती है। नाटक के किसी भी नारी पात्र की ओर उसकी दृष्टि नहीं उठती। उसके बिना वह अपना जीवन भी अग्रसर नहीं कर सकता। जबकि चन्द्रगुप्त समय-समय पर कल्याणी, ~~मालवि~~ मालविका और कार्नेलिया की ओर आकर्षित होता है। इससे उसके चरित्र की आंतरिक अस्थिरता प्रकट होती है। सच्चे प्रेमी के लिए 'एक ही' जीवन सर्वस्व होता है, वही उसके यौवन की प्रदीप्त दीपावली बनकर उसके जीवन को आलोकित करता है। पर्वतेश्वर का प्रेम तो उन्नत और वासनात्मक है जो प्रथम तो कल्याणी को अस्वीकार करता है और फिर उसी की रूप लिप्सा में फंसकर आकर्षित होता है। उसके भौतिक प्रेम में स्थिरता नहीं है। राक्षस और सुवासिनी का प्रेम कुछ-कुछ सिंहरण और अलका के प्रेम की ओर अग्रसर हो सका है, पर उसमें भी उतनी आस्था और दृढ़ विश्वास देखने को नहीं मिलता ~~जितना~~ जितना की सिंहरण के प्रेम में। सिंहरण का आदर्श ~~प्रेमी~~ जीवन, मरण के साथ न छोड़ने की प्रतिज्ञा करता है और वह जीवन में उसका निर्वाह भी करता है।

सिंहरण का चरित्र कर्मठता, साहस, निर्भीकता देशभक्ति की भावना एवं सहृदयता उसके कन्धों पर टिककर ही विकसित हुआ है। उसके चरित्र में मानव की समग्रता टिकी है, वीर की वीरता और मित्र की मित्रता। अपने कन्धों पर आए हुए उत्तरदायित्व के लिए वह प्राण-पण से लग जाता है तभी तो नाटक का प्रमुख पात्र चाणक्य उसके विषय में कहता है— "जब काली घटाओं से आकाश घिरा हो, रह-रह कर बिजली चमक जाती हो, पवन स्तब्ध हो -- उस समय जल बरसने की सम्भावना होती है। उसी प्रकार जब देश में युद्ध हो, सिंहरण मालव को समाचार मिला हो, तब उसके आने की निश्चित आशा है।" अलका सिंहरण के जीवन को पाकर अपने सौभाग्य पर फूली नहीं समाती। चन्द्रगुप्त को सिंहरण जैसा सहचर न मिला होता तो उसकी सफलता संदिग्ध हो जाती।